ESSAY

निर्धारित समय: तीन घंटे Time allowed: Three Hours	DTVF/19(JS)–ESY-**E2**	अधिकतम अंक: 250 Maximum Marks: 250

Name: FIROJ ALAM **Mobile Number:** _____

Medium (English/Hindi): _____ **Reg. Number:** AWAKE-19 / F-05

Center & Date: 21/07/19 **UPSC Roll No.** *(If allotted)*: 0833129

प्रश्नपत्र संबंधी विशेष अनुदेश

(प्रश्नों के उत्तर देने से पहले निम्नलिखित प्रत्येक अनुदेश को कृपया ध्यानपूर्वक पढ़ें)

प्रवेश-पत्र में प्राधिकृत माध्यम में निबंध लिखना आवश्यक है तथा इस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख प्रश्न-सह-उत्तर (क्यू. सी. ए.) पुस्तिका के मुखपृष्ठ पर निर्दिष्ट स्थान पर करना आवश्यक है। प्राधिकृत माध्यम के अलावा अन्य माध्यम में लिखे गए उत्तरों को अंक नहीं दिये जाएंगे।

प्रश्नों के उत्तर निर्दिष्ट शब्द-संख्या के अनुसार होने चाहिये।

प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़े गए किसी पृष्ठ अथवा पृष्ठ के भाग को पूर्णत: काट दीजिये।

QUESTION PAPER SPECIFIC INSTRUCTIONS

(Please read each of the following instructions carefully before attempting questions)

The ESSAY must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly on the cover of this Question-cum-Answer (QCA) Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in medium other than the authorized one.

Word limit, as specified, should be adhered to.

Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

	निबंध विषय संख्या (Essay Topic No.)	अंक (Marks)
खंड-A Section-A		
खंड-B Section-B		
सकल योग (Grand Total)		

_____

मूल्यांकनकर्त्ता (हस्ताक्षर)

Evaluator (Signature)

_____

पुनरीक्षणकर्त्ता (हस्ताक्षर)

Reviewer (Signature)

drishti | दृष्टि The Vision

खंड A और B प्रत्येक में से एक विषय चुनकर दो निबंध लिखिये, प्रत्येक लगभग 1000–1200 शब्दों का हो: **125 × 2 = 250**

Write TWO Essays, choosing ONE from each of the Section A and B, in about 1000–1200 words each: **125 × 2 = 250**

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

खंड–A / SECTION –A

1. तन के भूगोल से परे एक स्त्री के मन की गाँठें खोलकर कभी पढ़ा है तुमने।
   Have you ever looked beyond a woman's body to understand the complexities of her mind.
2. अंतरिक्ष पर शोध : निरर्थक प्रयास या अवसरों का पुंज।
   Space research : Futile efforts or a beam of opportunities.
3. प्रकृति की अनदेखी विनाश का आमंत्रण-पत्र है।
   Ignorance towards nature is an invitation to catastrophe.
4. समावेशी विकास संभव है, बशर्ते प्रतिस्पर्द्धा संघर्ष न बने।
   Inclusive development is possible, provided that competitions do not become a struggle.

खंड–B / SECTION –B

1. युद्ध के लिये तैयार रहना शांति को संरक्षित करने का सबसे प्रभावी उपाय है।
   To be prepared for war is the most effective means of preserving peace.
2. समस्याग्रस्त विश्व के लिये गांधीवादी विचारधारा की प्रासंगिकता।
   The relevance of Gandhian Ideology in the problem laden world.
3. सामाजिक एवं क्षेत्रीय न्याय की कमज़ोरियाँ संपन्न समाजों के अंतर्विरोधों को प्रत्यक्ष संघर्ष के रूप में प्रस्तुत कर सकती हैं।
   The weaknesses in social and regional justice can bring forward contradictions of affluent societies in form of direct struggle.
4. नैतिकता स्वयं अपना ही पुरस्कार है।
   Morality is its own reward.

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

खंड–A / SECTION –A

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

1. तन के भूगोल से परे एक स्त्री के मन की गाँठें खोलकर कभी पढ़ा है तुमने।

Have you ever looked beyond a woman's body to understand the complexities of her mind.

2. अंतरिक्ष पर शोध : निरर्थक प्रयास या अवसरों का पुंज।

Space research : Futile efforts or a beam of opportunities.

3. प्रकृति की अनदेखी विनाश का आमंत्रण-पत्र है।

Ignorance towards nature is an invitation to catastrophe.

4. समावेशी विकास संभव है, वशर्ते प्रतिस्पर्द्धा संघर्ष न बने।

Inclusive development is possible, provided that competitions do not become a struggle.

प्रकृति की अनदेखी विनाश का आमंत्रण-पत्र है।

मानव विकास प्रकृति से कितनी सघनता से सम्बंधित रहा है इसे सभ्यताओं की शुरुआत से ही देखा जा सकता है। मन में प्रश्न उठना स्वाभाविक ही है कि आखिर मानव ने अपनी विकास यात्रा की शुरुआत नदियों तथा

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

वनों के समीप निवास करके ही क्यों की? क्यों वह इतनी सहज मानवीय आवश्यकताओं के साथ जीवन व्यतीत कर रहा था?

दरअसल वह निश्चित था कि प्रकृति अपने अंदर इतने संसाधनों को समाहित किए हुए है कि हमारी आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकती है।

गांधी जी ने भी कहा था कि- "प्रकृति हमारी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए पर्याप्त संसाधन रखती है लेकिन लालचों की पूर्ति नहीं कर सकती है।"

यह हमारी जरूरतों का नहीं बल्कि लालचों का ही परिणाम है

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

कि आज प्रकृति को अनदेखी हमें विनाश की ओर अग्रसर कर रही है।

इसी अनदेखी का परिणाम ही है कि बैंगलुरु, केपटाऊन तथा वेनेजुएला व चेन्नई जैसे शहरों में जल-संकट ने विकराल रूप ले लिया है तथा प्रकृति द्वारा सहज रूप से उपलब्ध कराए जाने वाले जल के लिए संघर्षों में लोगों की मृत्यु हो रही है तथा व्यक्तियों को लंबी कतारों में लगना पड़ रहा है।

यदि हमने अपने इस लालच को नहीं रोका तथा समरसेबिल जैसे साधनों के माध्यम से जल अपव्यय को यूँ ही करते रहे तो यह

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

हमें विनाश की ओर खुला आमंत्रण होगा।

निम्नलिखित ग्राफ के माध्यम से संभावित विनाश को समझा जा सकता है।

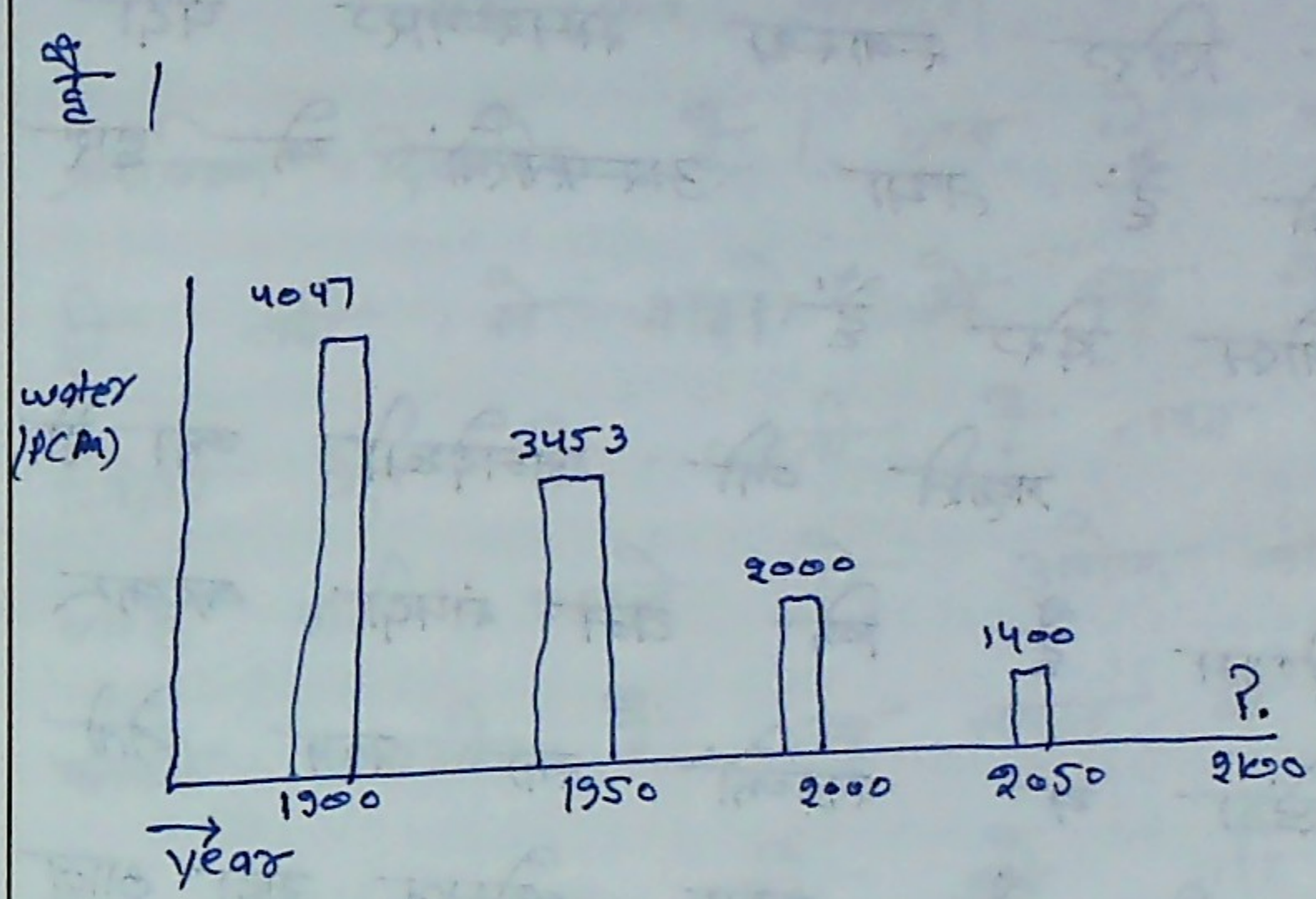

प्रकृति की अनदेखी का ही परिणाम है कि दिल्ली व बीजिंग जैसे शहरों में प्रदूषण के कारण आपातकाल घोषित करना पड़ रहा है।

विश्व बैंक व IPC की 5वीं रिपोर्ट बताती है कि पर्यावरणीय प्रदूषण

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

के कारण होने वाली मौतों में कई गुना वृद्धि हुई है। इस प्रकृति की अनदेखी ने अधिकाधिक लोगों के लिए स्वास्थ्य समस्याएँ पैदा की हैं तथा अस्पतालों के द्वार खोल दिए हैं।

प्रकृति की अनदेखी का ही परिणाम है कि वन संपदा कटकर बिल्डिंग व सड़कों का रूप लेती जा रही है तथा कोमल मृदा आज कंक्रीटों के बोझ के नीचे कहीं खो सी गई है।

पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति रूजवेल्ट ने कहा था कि - जो राष्ट्र मृदा को नष्ट करता है वह स्वयं को भी नष्ट कर लेता है। वन हमारी

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

पृथ्वी के फेफड़े हैं जो उसे नई साँस देते हैं तथा हमें जीने की नई उर्जा।"

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

यह बात वर्तमान में भी प्रासंगिक दिखती है। जब थोड़ी सी ही वर्षा से शहरों में बाढ़ की स्थिति पैदा हो जाती है तथा जगह-जगह पानी भरने से अनेक बीमारियाँ पनपने लगती हैं, तब समझ में आता है कि शायद शहरों को पूरी तरह कंक्रीट में बदलने से पहले मृदा व वन के बारे में ध्यान दिया होता।

प्रकृति की अनदेखी ने कई देशों के अस्तित्व पर ही प्रश्नचिन्ह लगा दिया है। कई रिपोर्ट यह

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

प्रमाणित करती है कि यदि ग्लेशियरों का पिघलना जारी रहा तो मॉरीशस, मालदीव जैसे द्वीपीय देश समुद्र में समाहित हो जाएँगे।

इतना ही क्यों? हमारे लालच व प्रकृति के प्रति लापरवाही ने ओजोन परत क्षरण से आस्ट्रेलिया जैसे देशों में त्वचा कैंसर जैसी बीमारियों का प्रसार किया है।

प्राकृतिक जैव-विविधता का विलोपन बड़ी तीव्र गति से हो रहा है। IUCN की 'रेड लिस्ट' में भी रेखांकित किया जा चुका है कि वर्तमान में जैव-विविधता सार्वाधिक खतरे में है।

अब तो पृथ्वी से मानव

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।

(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

के सामूहिक विनाश के लिए भी प्राकृतिक आपदाओं की ओर ही इशारा किया जा रहा है।

पूर्व कालों की अपेक्षा वर्तमान में चक्रवात, बाढ़, भू-स्खलन जैसी प्राकृतिक आपदाओं में तीव्रता व विकरालता आई है। वर्ष 2013 की उत्तराखण्ड बाढ़ हो या मोजाम्बिक का चक्रवात; इनके द्वारा किए गए विनाशों के लिए प्राकृतिक अनदेखी ने ही आमंत्रित किया था।

किसानों की आत्महत्याओं के पीछे कई कारण हो सकते हैं। लेकिन मृदा की उर्वरता में कमी, बाढ़-सूखा तथा प्राकृतिक आपदाओं की भूमिका को

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कौन नकार सकता है।

अब हमें सजग हो जाना चाहिए। अब और अधिक अनदेखी मृत्यु का लक्षण कहलायगी। अब हमें समझ जाना चाहिए कि आर्थिक लाभों के लिए प्रकृति का विनाश करना पुनर्जागरण की पेंटिंग को जलाने के समान है।

अर्थात् संरक्षित पेंटिंग एक बार जल गई तो उसे दोबारा प्राप्त नहीं किया जा सकता है। इसी प्रकार पेट्रोल, डीजल- प्राकृतिक गैस, मृदा, खनिज आदि न जाने ऐसे कितने प्राकृतिक संसाधन हैं जिन्हें यदि हमने लापरवाही में खो दिया

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

तो विनाश निश्चित है।

अब विश्व ने वर्ड्सवर्थ व कॉलरिज के 'प्रकृति की ओर लौटे' के नारे को थोड़ा गंभीरता से लेना शुरू किया है।

इसी का परिणाम है कि पेरिस समझौता, क्योटो प्रोटोकाल, मिनिमाता कन्वेंशन तथा अनेक क्षेत्रीय व बहुपक्षीय मंचों पर पर्यावरणीय संधियाँ स्थान ले रही हैं।

भारत में भी नमामि गंगे, राष्ट्रीय स्वच्छ वायु प्रोग्राम, राष्ट्रीय वायु गुणवत्ता सूचकांक तथा जल संरक्षण व जैव विविधता जैसे अनेक कार्यक्रमों के माध्यम से द्वार पर आए विनाश के आमंत्रण को लौटाने का प्रयास

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

किया जा रहा है।

दुनिया के अमीर लोगों ने भी सामुहिक निवेश के द्वारा प्लास्टिक प्रदूषण से निपटने का संकल्प लिया है। 'क्लीन सीज' जैसे प्रोग्राम समुंद्री स्वच्छता पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं।

हमें संविधान के निर्देशक तत्वों व मौलिक कर्तव्यों में वर्णित प्राकृतिक संरक्षण पर ध्यान केंद्रित करना होगा।

तथा जिस प्रकार से भारतीय परंपरा में पेड़ों को पूजा जाता है तथा भूमि को माँ माना जाता है इन सब मूल्यों के माध्यम से हमें आने वाली पीढ़ी में भी प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता विकसित

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

करनी होगी। ताकि हमारी पीढ़ी व आने वाली पीढ़ी भी समझ सके की — * समुंद्र, जल, वन आदि प्राकृतिक संसाधन हमें अपने पूर्वजों से विरासत में मिली हुई संपत्ति नहीं है बल्कि यह आने वाली पीढ़ी का हम पर लोन है जो हमें मूलधन (अर्थात् जैसा हमें मिला वैसा लौटाना है) सहित लौटाना होगा।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

खंड–B / SECTION –B

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

1. युद्ध के लिये तैयार रहना शांति को संरक्षित करने का सबसे प्रभावी उपाय है।

To be prepared for war is the most effective means of preserving peace.

2. समस्याग्रस्त विश्व के लिये गांधीवादी विचारधारा की प्रासंगिकता।

The relevance of Gandhian Ideology in the problem laden world.

3. सामाजिक एवं क्षेत्रीय न्याय की कमजोरियाँ संपन्न समाजों के अंतर्विरोधों को प्रत्यक्ष संघर्ष के रूप में प्रस्तुत कर सकती हैं।

The weaknesses in social and regional justice can bring forward contradictions of affluent societies in form of direct struggle.

4. नैतिकता स्वयं अपना ही पुरस्कार है।

Morality is its own reward.

समस्याग्रस्त विश्व के लिए गांधीवादी विचारधारा की प्रासंगिकता

गांधी जी ने कहा था कि — "जब भी मैं शंका में होता हूँ तो याद करता हूँ कि विजय हमेशा सत्य की ही हुई है।"

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

नेपोलियन या हिटलर जैसे व्यक्ति कुछ समय के लिए अजेय लग सकते हैं लेकिन अंतिम सफलता हमेशा सत्य की राह को ही मिली है।

कई बार मन में प्रश्न आता है कि समस्याग्रस्त विश्व में किसी संभावित हल के लिए लोग गांधी जी के मूल्यों की ओर क्यों देख रहे हैं, हिटलर व नेपोलियन जैसे लोगों की तरफ क्यों नहीं?

क्यों अधिकाधिक देश गांधी जी की मूर्ति स्थापित कर रहे हैं? क्यों अधिकांश राष्ट्र अध्यक्ष भारत आगमन के दौरान राजघाट जाकर गांधी जी के मूल्यों को सम्मान देते हैं? दरअसल दुनिया जानती है कि

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

इस समस्याग्रस्त विश्व के लिए गांधीवादी विचारधारा पहले से कहीं अधिक प्रासंगिक हो गई है।

सर्वप्रथम यह देख लेते हैं कि वर्तमान विश्व किन समस्याओं से ग्रस्त हैं फिर प्रत्येक समस्या के गांधीवादी विचारधारा की प्रासंगिकता का परीक्षण करेंगे।

वर्तमान में विश्व आतंकवाद, पर्यावरणीय संकट, माइग्रेशन की समस्या, शस्त्रों की दौड़, धार्मिक असहिष्णुता, नैतिकता का पतन, ट्रेड वार आदि समस्याओं से ग्रस्त है।

धार्मिक असहिष्णुता के कारण मॉब लिंचिंग, आतंकवाद जैसी बुराइयाँ पनप रही हैं। न्यूजीलैंड व श्रीलंका में हुए धार्मिक स्थलों पर हमले इसकी

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

भावना को प्रकट करते हैं। गांधी जी धार्मिक सद्भाव' व धार्मिक समभाव की बात करते हैं अर्थात् प्रत्येक धर्म समान है। यदि इस मूल्य को प्रोत्साहित करें तो धार्मिक हिंसाओं से निपटा जा सकता है।

अधिकाधिक दोहन की भावना ने पर्यावरणीय संकट को बढ़ा दिया है। आज सम्पूर्ण विश्व में बाढ़, चक्रवात, सूखे आदि प्राकृतिक आपदाओं की पुनरावृत्ति ने मानवीय अस्तित्व के समक्ष गंभीर प्रश्न खड़ा कर दिया है। गांधी जी ने कहा — "प्रकृति हमारी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए पर्याप्त साधन उपलब्ध है लेकिन लालचों की पूर्ति के लिए नहीं।"

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

यदि सम्पूर्ण विश्व अपने स्वार्थ या लालच सिद्धि की भावना को त्यागकर पर्यावरण को आवश्यकतापूर्ती के लिए इस्तेमाल करे तो भविष्य के संकट को रोका जा सकता है।

दुनिया में शस्त्रों की दौड़ ने नया आयाम ले लिया है। कई देश परमाणु शस्त्र प्राप्त करने की होड़ में हैं तथा आए दिन अखबारों में खबर छपती रहती हैं कि फलां देश अपनी सुरक्षा हेतु F-35 या S-400 मिसाइल खरीदना चाहता है। इस शस्त्र दौड़ ने विश्व को युद्ध के संभावित मैदान पर लाकर खड़ा कर दिया है। गांधी जी ने कहा था कि— "आँख के

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)
www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

बदले आँख पूरे विश्व को अंधा कर देगी।"

अर्थात् सुरक्षा या बदले की भावना से हथियारों का भण्डार गांधीवादी नज़रिये से अप्रासंगिक है।

गांधी जी तो 'सर्वोदय' की बात करते हैं तथा सभी देशों के विकास में प्रत्येक देश का विकास देखते हैं। वे शस्त्र दौड़ को प्रतिस्पर्धा के आधार पर विश्व निर्माण की बात की अपेक्षा विश्व सहयोग की भावना की बात को ~~स्वीकारते~~ स्वीकारते हैं।

यदि अंतर्राष्ट्रीय सम्बंधों को बनाते समय वर्तमान में प्रतिस्पर्धा के स्थान पर सहयोग को बढ़ावा दिया

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

जाए तो नियम आधारित विश्व ऑर्डर स्थापित होगा तथा प्रत्येक देश अंतर्राष्ट्रीय नियमों-कानूनों का सम्मान करेगा।

विश्व के समक्ष विज्ञान के सही इस्तेमाल का प्रश्न भी खड़ा है। विज्ञान के प्रयोग से पृथ्वी से लेकर अंतरिक्ष तक हथियार तैनात कर दिए गए हैं। साइबर क्राइम के माध्यम से निजता का उल्लंघन किया जा रहा है। जैविक व रसायनिक हमले हो रहे हैं। गांधी जी ने स्पष्ट शब्दों में कहा था कि — "नैतिकता के बिना विज्ञान विनाश का साधन है।"

अब विश्व को चाहिए कि अपने वैज्ञानिक विकास का प्रयोग

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

गांधीवादी विचारधारा के अनुसार को ताकि सारी मानवता वैज्ञानिक विकास से डरे नहीं अपितु सुखमय हो जाए।

देशों के मध्य आर्थिक हितों के लिए टकराव भी आज की सच्चाई है। ऐसे वार जैसी समस्या के हल के लिए गांधी जी के 'न्यासिता सिद्धांत' की ओर देखा जा सकता है अर्थात् जो राष्ट्र विकसित व सम्पन्न है उसे अपने साधनों का इस्तेमाल गरीब देशों के हित में करना चाहिए।

आर्थिक असमानता को समाप्त करने में भी यह सिद्धांत प्रासंगिक है। अजीम प्रेमजी, बिल गेट्स, वारेन बफेट जैसे लोग जो परोपकारिता के कार्य

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

के माध्यम से गरीब, शोषित, वंचितों के जीवन को सँवारने में लगे हैं। ऐसे लोग सही अर्थों में गांधीजी की विचारधारा को ~~फॉलो~~ मान रहे हैं।

गांधी जी अहिंसा में दृढ़ विश्वास करते थे। इसी मूल्य के बल पर उन्होंने भारत को आजादी दिलायी। ~~नैतिकता~~ आइंस्टीन ने कहा था कि - "आने वाली पीढ़ियाँ विश्वास नहीं करेंगी कि बिना लाठी ~~चलाए~~ किसी व्यक्ति ने देश को आजाद कराने में की भूमिका निभायी थी।"

यदि अहिंसा से देश आजाद हो सकते हैं तो वैश्विक स्तर पर फैले नृजातीय संघर्षों, शरणार्थियों के संघर्षों को भी समाप्त किया जा

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

सकता है।

दरअसल अब आवश्यकता है कि वैश्विक स्तर पर गांधी जी के मूल्यों का प्रसार किया जाए तथा शिक्षा पद्धतियों में उनका समावेश किया जाए। जिस प्रकार गांधी जी चरित्रविहीन शिक्षा को अनुपयोगी समझते थे तथा मानवता की सेवा को ही अपना सबसे बड़ा धर्म मानते थे। यदि विश्व आज इन मूल्यों को अपनाने के लिए तैयार है तो निश्चित ही विभिन्न देशों की पीढ़ियों में गांधी व नेल्सन मंडेला जैसे लोग बनेंगे जो विश्व को प्रतिस्पर्धा के नजरिए से नहीं

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

बल्कि सहयोग की भावना से देखेंगे।

वर्तमान में जो लैंगिक असमानता दिखती है तथा लैंगिक हिंसा बढ़ रही है उसे भी गांधीवादी मूल्यों से समाप्त किया जा सकता है। गांधी जी लैंगिक समानता को लक्ष्य से भी बड़ा मानते थे तथा दुनिया से गरीबी, शोषण, भ्रष्टाचार को समाप्त करने व सुशासन लाने को पहली शर्त के रूप में देखते थे। गांधी जी ने कहा था कि "कोई भी देश अपनी आधी आबादी के सहयोग के बिना विकसित आबादी नहीं हो सकता है।"

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

अतः आवश्यकता है कि जब भारत अपनी आजादी की वर्षगांठ को 75 वर्ष का उत्सव बनाए तो सम्पूर्ण विश्व में भी गांधीवादी विचारधारा का प्रसार करने का प्रयास करे ताकि सारी दुनिया 'वसुधैव कुटुम्बकम' की तरह एक परिवार के रूप में रह सके

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation